जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि

आज की भागदौड़ से भरी ज़िंदगी में संगीत, कला और साहित्य सुखद अनुभूति प्रदान करते हैं। साहित्य की एक ऐसी ही कलात्मक विधा है-कविता। हमें प्रसन्नता है कि हमारे रेल परिवार में अनेक अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी सम्वेदनशील भावनाओं को काव्यात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करने की क्षमता रखते हैं। काव्यात्मक अभिव्यक्ति के इस पृष्ठ पर हम रेल परिवार के ऐसे ही कुछ कवियों की काव्य रचनाओं को प्रकाशित कर रहे हैं।

✍ प्रधान सम्पादक

कोहराम

अब तो आशा टूट रही है, कहाँ हो हे राम ?
भेड़ियों की जमात ने यहाँ, मचा रखा है कोहराम..!
दिखावे के लिए धवल मुखौटा, अंदर में कुछ और,
कथनी आसमान करनी धरा, दिया हमें झकझोर।
न पेड़ बचे, न डालियाँ,
अब तो टूटने लगी हैं कलियाँ,
बेशरम हो चुकी हैं, हर गाँव की गलियाँ,
मुख में राम, तन में काम,
कैसे पहचानें, सब हैं गुमनाम,
प्रकट हो दोबारा हे राम,
नष्ट करो भेड़ियों के दुष्काम।
अब तो आशा टूट रही है, कहाँ हो हे राम ?
भेड़ियों की जमात ने यहाँ, मचा रखा है कोहराम..!

✍ दिनेश वर्मा
सहायक परिवहन प्रबंधक (नियम)-चर्चगेट

ईश्वर की ये कैसी विचित्र माया... ?

ईश्वर की ये कैसी विचित्र माया ?
कहीं धूप मिले, तो कहीं छाया..!
कहीं तपती धूप से, बढ़ी तपन,
कहीं धरा के सीने में, हुई जलन,
कहीं एक बूँद नहीं,
कहीं पर बादल छाया,
तो कहीं बिन बादल ही, भीगी काया।
कहीं दुर्घटनाओं ने, बरपाया कहर,
मौत बना कहीं, ट्रेन का सफ़र,
कोई सफ़र में, जीवन से मुक्ति पाया,
तो किसी ने सफ़र में ही, जीवन पाया।
कहीं पैसे बिन, इंसां जीवन छोड़ा,
कहीं पैसा बना, मौत का कोड़ा,
कहीं पैसे ने इंसान को हैवान बनाया,
तो कहीं पैसे ने ही
इंसान को महान बनाया..!

✍ रजनीश प्रजापति,
लोको पायलट, बामी, मुंबई

देश भक्ति गीत

जिसके सिर हिमाचल मुकुट सोहता,
जिसका वैभव सुरों का भी मन मोहता,
जिसके चरणों में सागर करे नित प्रणाम,
उस धरा को प्रणाम, उस धरा को प्रणाम..!
जिसके ऋषियों ने वेदों का गायन किया,
जिसके भक्तों ने धरती को पावन किया,
जिसके शूरों ने जय बिन न लिया विराम,
उस धरा को प्रणाम, उस धरा को प्रणाम..!
जिसकी गंगा ने तारे हैं अनगिनत अधम,
जिसकी यमुना ने पापों को किया खतम,
जिसकी नदियों ने सींची है धरती तमाम
उस धरा को प्रणाम, उस धरा को प्रणाम..!
जिसके खेतों में सोना उपजता अपार,
जिसकी नदियों में बहती है अमृत की धार,
जिसकी गोदी में है रत्नों का धाम,
उस धरा को प्रणाम, उस धरा को प्रणाम..!

✍ संदीप जैन,
कार्यालय अधीक्षक,
कोचिंग डिपो,
पश्चिम रेलवे, इन्दौर

सूडोकू

कैसे खेलें:-

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है।
- आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3X3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
- पहेली का केवल एक ही हल है।

2					3			7
	3	8						
		4		5	8		3	2
5	1				4			8
		2				7		
4			7				1	6
9	7		1	4		8		
						4	9	
1			9					3

			4		2	9		
8				3				
4	2		1		6	8		
	9				1	4		5
5	1			6			9	8
2		8	5				6	
		3	2		9		7	1
				5				9
		2	6		7			